



THE SCHOLARLY FORESIGHT

Volume-01, Issue-01, Month -September, Year -2026

Website - <https://scholarlyforesight.com/>

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक-शिक्षा का व्यावसायिक विकास : विकसित भारत 2047 की ओर एक बहुविषयक दृष्टिकोण

¹सुमन पाल (शोधार्थिनी)

शिक्षक शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), कोटवाँ, जमुनीपुरदुबावल-, प्रयागराज 20100

Email: sp1149475@gmail.com

²डॉ० शिवाश्रेय यादव (शोध निर्देशक, सहायक आचार्य)

शिक्षकशिक्षा विभाग- नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), कोटवाँ, जमुनीपुरदुबावल-, प्रयागराज 20100

Email: yadavshiv35@gmail.com

Received-08/08/2026

Accepted-23/08/2026

Published-01/09/2026

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक एवं परिवर्तनकारी सुधारों का आधार प्रस्तुत करती है। इस नीति का प्रमुख उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण, समावेशी, बहुविषयक, कौशलआधारित तथा - सक्षम शिक्षा के माध्यम से भारत को वर्ष-प्रौद्योगिकी 2047 तक एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षकशिक्षा का व्यावसायिक विकास अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता - है, क्योंकि शिक्षक शिक्षा प्रणाली का प्रमुख आधार हैं। यदि शिक्षकों को नवीन शिक्षण पद्धतियों, डिजिटल तकनीकों, अनुसंधानआधारित शिक्षण-, मूल्यांकन प्रणाली, समावेशी शिक्षा तथा नैतिक एवं व्यावसायिक मूल्यों से निरंतर सशक्त किया जाए, तभी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया जा सकता है।

यह शोध पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में शिक्षकशिक्षा के व्यावसायिक विकास की - आवश्यकता, वर्तमान चुनौतियों, अवसरों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करता है। अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों जैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, NCFTE, NCTE, UGC, NCERT, विभिन्न शोधपत्रों-, पुस्तकों तथा सरकारी दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है। शोध का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development), डिजिटल दक्षता, अनुसंधान संस्कृति,

बहुविषयक दृष्टिकोण, समावेशी शिक्षा तथा नवाचार आधारित शिक्षण विकसित भारत 2047 की आधारशिला हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षकशिक्षा संस्थानों, विश्वविद्यालयों, नीति-निर्माताओं तथा सरकार के समन्वित प्रयासों से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षक तैयार किए जा सकते हैं। यह शोध निर्माताओं-पत्र नीति, शिक्षकशिक्षकों-, शोधार्थियों तथा शिक्षा प्रशासकों के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करता है तथा शिक्षकशिक्षा के भविष्य के लिए एक व्यवहारिक दिशा प्रदान करता है।

मुख्य शब्द :राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षकशिक्षा-, व्यावसायिक विकास, सतत व्यावसायिक विकास, विकसित भारत 2047, बहुविषयक शिक्षा

परिचय:

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास, वैज्ञानिक नवाचार, सांस्कृतिक संरक्षण तथा राष्ट्रीय प्रगति का प्रमुख आधार बन चुकी है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसकी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता पर निर्भर करती है और शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक शिक्षक होता है। इसी कारण कहा गया है कि भारत "किसी भी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता से अधिक नहीं हो सकती।" शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है-जैसे विशाल एवं विविधतापूर्ण देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षक राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत की पहली ऐसी व्यापक शिक्षा नीति है जो 21वीं सदी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। इसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक लचीला, समावेशी, बहुविषयक, अनुसंधानउन्मुख-, कौशलआधारित तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप बनाना है। यह नीति केवल विद्यार्थियों के विकास पर ही नहीं, बल्कि शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास पर भी विशेष बल देती है। नीति का स्पष्ट मत है कि शिक्षकों को केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि नवाचारी, शोधोन्मुख, तकनीकी रूप से दक्ष तथा नैतिक मूल्यों से युक्त पेशेवर बनाया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार वर्ष 2030 तक शिक्षकशिक्षा का प्रमुख कार्यक्रम चार वर्षीय -) .एड.एकीकृत बी(Integrated B.Ed.) होगा, जिससे शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके। इसके साथ ही शिक्षकों के लिए प्रतिवर्ष कम से कम 50 घंटे के सतत व्यावसायिक विकास)Continuous Professional Development) का प्रावधान किया गया है, ताकि वे नई शिक्षण विधियों, डिजिटल तकनीकों, समावेशी शिक्षा, मूल्यांकन पद्धतियों तथा शोध आधारित शिक्षण से निरंतर अद्यतन रह सकें। वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता)Artificial Intelligence), डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन अधिगम, मिश्रित शिक्षण)Blended Learning), डेटा विश्लेषण तथा बहुविषयक अध्ययन ने शिक्षा के स्वरूप को बदल दिया है। ऐसे परिवेश में शिक्षकों का व्यावसायिक विकास केवल प्रशिक्षण तक सीमित नहीं रह

सकता, बल्कि उन्हें आजीवन सीखने वाले (Lifelong Learners) के रूप में विकसित करना आवश्यक है। NEP 2020 इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए शिक्षक को परिवर्तन का नेतृत्वकर्ता मानती है।

शिक्षकशिक्षा का व्यावसायिक विकास केवल शिक्षण कौशल तक सीमित नहीं है-, बल्कि इसमें नेतृत्व क्षमता, अनुसंधान कौशल, डिजिटल साक्षरता, नैतिकता, नवाचार, समावेशी दृष्टिकोण, आलोचनात्मक चिंतन तथा सहयोगात्मक अधिगम जैसी क्षमताओं का विकास भी शामिल है। विकसित भारत 2047 की परिकल्पना तभी साकार हो सकती है जब देश का प्रत्येक शिक्षक इन दक्षताओं से संपन्न हो तथा विद्यार्थियों को वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित करने में सक्षम हो। हालाँकि इस दिशा में अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं, जैसे शिक्षकप्रशिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता में असमानता-, डिजिटल संसाधनों की कमी, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच अंतर, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की औपचारिकता तथा अनुसंधान संस्कृति का सीमित विकास। इन चुनौतियों के समाधान हेतु नीति, संस्थानों और शिक्षकों के बीच प्रभावी समन्वय आवश्यक है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में शिक्षकशिक्षा के व्यावसायिक विकास की - अवधारणा, आवश्यकता, चुनौतियों, अवसरों तथा विकसित भारत 2047 की दिशा में इसकी भूमिका का समग्र विश्लेषण करना है। साथ ही यह शोधपत्र नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए व्यवहारिक सुझाव - शिक्षा को अधिक सशक्त-प्रस्तुत करता है तथा शिक्षक, उत्तरदायी एवं भविष्य उन्मुख बनाने की दिशा में एक अकादमिक विमर्श स्थापित करता है।

साहित्य समीक्षा :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षकशिक्षा के व्यावसायिक विकास पर अनेक राष्ट्रीय एवं - अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों ने यह स्पष्ट किया है कि शिक्षा की गुणवत्ता का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक शिक्षक होता है। इसलिए शिक्षकशिक्षा को गुणवत्तापूर्ण-, शोध आधारित तथा सतत व्यावसायिक विकास-(Continuous Professional Development) से जोड़ना समय की आवश्यकता है।

UNESCO (2015) ने Education 2030 Framework for Action में स्पष्ट किया कि सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति के लिए शिक्षकों की गुणवत्ता, प्रशिक्षण तथा निरंतर व्यावसायिक विकास अनिवार्य है। रिपोर्ट में शिक्षक को केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि परिवर्तनकारी नेतृत्वकर्ता (Transformative Leader) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। NCTE (2009) द्वारा प्रकाशित National Curriculum Framework for Teacher Education (NCFTE) में शिक्षक शिक्षा को चिंतनशील-(Reflective), समावेशी, नवाचारपूर्ण तथा बालकेंद्रित बनाने पर विशेष बल दिया गया। इस दस्तावेज़ में - शिक्षक को जीवनपर्यंत सीखने वाला पेशेवर माना गया है।

Ministry of Education द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकशिक्षा में व्यापक सुधारों का - प्रस्ताव प्रस्तुत करती है। नीति के अनुसार वर्ष 2030 तक चार वर्षीय एकीकृत बीकार्यक्रम को मानक .एड. शिक्षा कार्यक्रम बनाया जाएगा तथा प्रत्येक शिक्षक के लिए प्रतिवर्ष न्यूनतम-शिक्षक 50 घंटे का सतत व्यावसायिक विकास सुनिश्चित किया जाएगा। इससे शिक्षकों की दक्षता, तकनीकी क्षमता तथा शिक्षण गुणवत्ता में सुधार होने की अपेक्षा की गई है। NCERT द्वारा प्रकाशित विभिन्न प्रशिक्षण मॉड्यूल तथा शिक्षक दक्षता रूपरेखा (Teacher Competency Framework) में अनुभवात्मक अधिगम, गतिविधि-आधारित शिक्षण, समावेशी शिक्षा, ICT तथा दक्षताआधारित मूल्यांकन पर विशेष बल दिया गया है।-

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर Linda Darling-Hammond (2017) ने अपने शोध में बताया कि प्रभावी शिक्षक-प्रशिक्षण, विद्यालय आधारित प्रशिक्षण, सहयोगात्मक अधिगम तथा सतत व्यावसायिक विकास से विद्यार्थियों की उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। उन्होंने शिक्षक शिक्षा में व्यवहारिक अनुभव- (Practicum) तथा चिंतनशील अभ्यास (Reflective Practice) को अत्यंत आवश्यक माना। John Hattie (2009) के शोध Visible Learning में यह निष्कर्ष निकाला गया कि शिक्षक की गुणवत्ता, शिक्षण रणनीतियाँ तथा फीडबैक विद्यार्थियों के अधिगम को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं। इसलिए शिक्षक के व्यावसायिक विकास में निवेश शिक्षा सुधार का प्रमुख आधार है।

भारतीय शोधों में भी यह पाया गया है कि डिजिटल शिक्षा, ईसामग्री-, ऑनलाइन प्रशिक्षण, मिश्रित शिक्षण (Blended Learning), अनुसंधान संस्कृति तथा बहुविषयक दृष्टिकोण शिक्षकशिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ - करते हैं। हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की औपचारिकता तथा ICT अवसंरचना की सीमाएँ अभी भी प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

उपरोक्त साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकशिक्षा के क्षेत्र में - एक परिवर्तनकारी दस्तावेज़ है। यह केवल शिक्षक तैयार करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्हें आजीवन सीखने वाला, शोधउन्मुख-, तकनीकी रूप से दक्ष, समावेशी तथा नैतिक पेशेवर बनाने पर बल देती है। वर्तमान शोध इन्हीं विचारों का विश्लेषण करते हुए विकसित भारत 2047 के संदर्भ में शिक्षकशिक्षा के - व्यावसायिक विकास की भूमिका का अध्ययन करता है।

शोध पद्धति :

प्रस्तुत शोध) पत्र गुणात्मक-Qualitative) एवं वर्णनात्मक (Descriptive) शोध पद्धति पर आधारित है। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षकशिक्षा के व्यावसायिक विकास की - अवधारणा, आवश्यकता, चुनौतियों, अवसरों तथा विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में उसकी भूमिका का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में द्वितीयक (Secondary) स्रोतों से प्राप्त तथ्यों एवं सूचनाओं का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या

रूपरेखा, NCTE द्वारा प्रकाशित शिक्षकशिक्षा संबंधी दस्तावेज़, NCERT के प्रशिक्षण मॉड्यूल, UGC के दिशानिर्देश-, शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्टें, UNESCO के प्रकाशन, शोधपत्र-, पुस्तकें, शोधप्रबंध-, ईजर्नल - शिक्षा-तथा अन्य विश्वसनीय शैक्षिक स्रोतों का अध्ययन किया गया। इन दस्तावेज़ों के आधार पर शिक्षक के व्यावसायिक विकास से संबंधित प्रमुख अवधारणाओं का विश्लेषण किया गया।

अध्ययन में दस्तावेज़ विश्लेषण (Document Analysis Method) का उपयोग किया गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न नीतिगत दस्तावेज़ों एवं शोध अध्ययनों का तुलनात्मक अध्ययन कर समानताओं, भिन्नताओं तथा उभरती प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया। इसके अतिरिक्त विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) के माध्यम से शिक्षकशिक्षा-, सतत व्यावसायिक विकास, डिजिटल दक्षता, बहुविषयक शिक्षा, समावेशी शिक्षा, अनुसंधान संस्कृति तथा नवाचार जैसे प्रमुख आयामों की पहचान की गई।

शोध का क्षेत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षकशिक्षा के व्यावसायिक विकास तक सीमित रखा गया है। अध्ययन में विकसित भारत 2047 की परिकल्पना के संदर्भ में शिक्षकशिक्षा की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। चूँकि यह एक वैचारिक एवं नीतिगत अध्ययन है, इसलिए इसमें प्राथमिक आँकड़ों (Primary Data) का संकलन नहीं किया गया है। अध्ययन की विश्वसनीयता (Reliability) सुनिश्चित करने के लिए केवल प्रामाणिक एवं आधिकारिक स्रोतों का उपयोग किया गया। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गए। निष्पक्षता बनाए रखने के लिए शोधकर्ता ने तथ्यों की वस्तुनिष्ठ व्याख्या की तथा व्यक्तिगत मतों को न्यूनतम रखा।

इस अध्ययन की कुछ सीमाएँ भी हैं। यह पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, इसलिए निष्कर्ष उपलब्ध साहित्य एवं दस्तावेज़ों तक सीमित हैं। भविष्य में प्राथमिक आँकड़ों, सर्वेक्षण, साक्षात्कार तथा केस स्टडी के माध्यम से इस विषय पर अधिक व्यापक एवं अनुभवजन्य शोध किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध पद्धति राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकशिक्षा के व्यावसायिक विकास का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है तथा विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है।

व्याख्या :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन का आधार प्रस्तुत करती है। इसका उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम में परिवर्तन करना नहीं, बल्कि ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जो ज्ञान, कौशल, नवाचार, अनुसंधान, नैतिक मूल्यों तथा रोजगारपरक दक्षताओं से युक्त नागरिक तैयार कर सके। इस परिवर्तन की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण आधार शिक्षक हैं। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक शिक्षा के व्यावसायिक विकास-Professional Development of Teacher Education) को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। शिक्षकशिक्षा का व्यावसायिक विकास एक सत-त प्रक्रिया है, जिसके

माध्यम से शिक्षक अपने विषयज्ञान-, शिक्षणकौशल-, अनुसंधान क्षमता, तकनीकी दक्षता, नेतृत्व गुण तथा व्यावसायिक नैतिकता का निरंतर विकास करते हैं। NEP 2020 स्पष्ट रूप से कहती है कि शिक्षक केवल पाठ पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि अधिगम का मार्गदर्शक (Facilitator), नवाचारकर्ता (Innovator), शोधकर्ता (Researcher), परामर्शदाता (Mentor) तथा समाज (निर्माता-Nation Builder) है। इसलिए शिक्षकशिक्षा को भी इसी दृष्टिकोण से पुनर्गठित किया जाना आवश्यक है।-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण प्रावधान चार वर्षीय एकीकृत बीकार्यक्रम है। इस .एड. कौशल का संतुलित विकास करना है-कार्यक्रम का उद्देश्य विषय ज्ञान और शिक्षण, जिससे शिक्षक अधिक दक्ष, व्यावहारिक एवं उत्तरदायी बन सकें। इससे शिक्षकशिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता-, पारदर्शिता तथा उत्तरदायित्व भी बढ़ेगा। नीति में सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development-CPD) पर विशेष बल दिया गया है। प्रत्येक शिक्षक को प्रतिवर्ष कम से कम 50 घंटे के प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों तथा नवाचार कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। इससे शिक्षक नई शिक्षण विधियों, मूल्यांकन तकनीकों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डिजिटल संसाधनों तथा समावेशी शिक्षा की अवधारणाओं से अद्यतन रहेंगे।

वर्तमान डिजिटल युग में ICT (Information and Communication Technology) शिक्षकशिक्षा का - अभिन्न अंग बन चुका है। NEP 2020 शिक्षकों को डिजिटल साक्षरता, ईकंटेंट निर्माण-, वर्चुअल कक्षा, लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS), ऑनलाइन मूल्यांकन तथा मिश्रित शिक्षण (Blended Learning) में दक्ष बनाने पर बल देती है। इससे शिक्षण अधिक प्रभावी, सहभागितापूर्ण तथा विद्यार्थीकेंद्रित बनता है। - महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के अनुभव ने यह सिद्ध किया कि तकनीकी दक्ष शिक्षक किसी भी परिस्थिति में शिक्षा की निरंतरता बनाए रख सकते हैं। बहुविषयक (Multidisciplinary) दृष्टिकोण भी NEP 2020 की प्रमुख विशेषता है। शिक्षक को केवल अपने विषय तक सीमित न रहकर अन्य विषयों के साथ समन्वय स्थापित करने की क्षमता विकसित करनी होगी। उदाहरण के लिए, भूगोल का शिक्षक पर्यावरण, अर्थशास्त्र, इतिहास, विज्ञान तथा सूचना प्रौद्योगिकी के साथ अंतर्विषयक संबंध स्थापित करके विद्यार्थियों में समग्र समझ विकसित कर सकता है। यह दृष्टिकोण विकसित भारत 2047 के लिए आवश्यक नवाचार और समस्यासमाधान क्षमता को बढ़ावा देता है।-

नीति समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) को भी शिक्षकशिक्षा का अनिवार्य भाग मानती है। प्रत्येक - शिक्षक को दिव्यांग विद्यार्थियों, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों तथा विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने और उनके अनुरूप शिक्षण करने में सक्षम होना चाहिए। इसके लिए शिक्षकप्रशिक्षण कार्यक्रमों में समावेशी शिक्षण रणनीतियों को शामिल करना आवश्यक - है। शिक्षकशिक्षा में अनु-संधान संस्कृति (Research Culture) का विकास भी अत्यंत आवश्यक है। शिक्षक यदि शोधआधारित शिक्षण अपनाते हैं-, तो वे अपनी कक्षा की समस्याओं का समाधान स्वयं खोज सकते हैं

और नवीन शिक्षण विधियों का विकास कर सकते हैं। NEP 2020 विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में Action Research, Reflective Practice तथा नवाचार आधारित परियोजनाओं को प्रोत्साहित करती है। इससे शिक्षण अधिक वैज्ञानिक, प्रमाणआधारित तथा प्रभावी बनता है।-

व्यावसायिक विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम नेतृत्व क्षमता (Leadership Skills) है। आधुनिक शिक्षक को केवल कक्षा का संचालन ही नहीं, बल्कि विद्यालय प्रबंधन, सामुदायिक सहभागिता, अभिभावकों से संवाद, शैक्षिक योजना निर्माण तथा संस्थागत गुणवत्ता सुधार में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। इस प्रकार शिक्षक शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन के अग्रदूत बन सकते हैं। हालाँकि इन सुधारों के प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना की कमी, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता में असमानता, वित्तीय संसाधनों का अभाव, प्रशिक्षित शिक्षकशिक्षकों की कमी तथा परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु सरकार, विश्वविद्यालयों, शिक्षकशिक्षा संस्थानों, विद्यालयों तथा समाज के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकशिक्षा को केवल डिग्री प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं मानती, बल्कि इसे सतत, नवाचारी, शोधआधारित, तकनीकी रूप से सक्षम और मूल्यपरक व्यावसायिक विकास की प्रक्रिया के रूप में स्थापित करती है। यदि इस नीति का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए, तो शिक्षक न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करेंगे, बल्कि विकसित भारत"2047" के निर्माण में ज्ञानसम्पन्न, कौशलयुक्त, नवाचारी और उत्तरदायी नागरिक तैयार करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

सुझाव :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन तथा शिक्षकशिक्षा के व्यावसायिक विकास को सुदृढ़ बनाने के लिए बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता है। सबसे पहले, शिक्षकशिक्षा संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जाना चाहिए। ये कार्यक्रम केवल औपचारिक न होकर व्यवहारिक, शोधआधारित तथा विद्यालय की वास्तविक आवश्यकताओं से जुड़े होने चाहिए। प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों को नवीन शिक्षण विधियों, दक्षताआधारित शिक्षा, परियोजनाआधारित अधिगम तथा अनुभवात्मक शिक्षण का अभ्यास कराया जाना चाहिए। सभी शिक्षकों के लिए सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development-CPD) को प्रभावी रूप से लागू किया जाए तथा प्रतिवर्ष न्यूनतम 50 घंटे के प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए। प्रशिक्षण केवल उपस्थिति तक सीमित न रहकर उसके परिणामों का मूल्यांकन भी किया जाए। शिक्षकों के प्रशिक्षण में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यमों का संतुलित उपयोग किया जाना चाहिए।

शिक्षकशिक्षा संस्थानों में डिजिटल अवसंरचना को सुदृढ़ बनाया जाए। प्रत्येक शिक्षक को डिजिटल - उपकरणों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS), ईकॉन्टेंट निर्माण-, वर्चुअल कक्षाओं तथा ऑनलाइन मूल्यांकन की तकनीकों में दक्ष बनाया जाए। ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में इंटरनेट सुविधा, स्मार्ट कक्षाओं तथा डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। शिक्षकशिक्षा में - अनुसंधान संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक शिक्षक को Action Research, केस स्टडी, नवाचार परियोजनाओं तथा शोध प्रकाशनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों एवं शिक्षकशिक्षा संस्थानों में शोध अनुदान-, अकादमिक सहयोग तथा राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में - सहभागिता के अवसर बढ़ाए जाएँ।

बहुविषयक शिक्षा को शिक्षकप्रशिक्षण का अभिन्न भाग बनाया जाए। शिक्षकों को विभिन्न विषयों के बीच - संबंध स्थापित करने तथा अंतर्विषयक परियोजनाएँ तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जाए। इससे विद्यार्थियों में समग्र सोच, समस्यासमाधान क्षमता तथा रचनात्मकता का विकास होगा। शिक्षकशिक्षा में समावेशी - शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए। शिक्षकों को विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित वर्गों तथा विविध भाषाई एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के साथ प्रभावी शिक्षण के लिए प्रशिक्षित किया जाए। इससे शिक्षा में समानता एवं सामाजिक न्याय को बढ़ावा मिलेगा।

विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, उद्योगों तथा समुदाय के बीच सहयोग को मजबूत किया जाए ताकि शिक्षक वास्तविक जीवन के अनुभवों से जुड़ सकें। इसके अतिरिक्त शिक्षक के उत्कृष्ट कार्यों को सम्मानित करने, पदोन्नति में व्यावसायिक विकास को महत्व देने तथा नवाचार को प्रोत्साहित करने की व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए। इन उपायों से शिक्षकशिक्षा अधिक प्रभावी-, उत्तरदायी एवं गुणवत्तापूर्ण बन सकेगी।

भविष्य में क्रियान्वयन :

विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभावी क्रियान्वयन अत्यंत आवश्यक है। शिक्षकशिक्षा के क्षेत्र में भविष्य की रणनीति ऐसी होनी चाहिए जो गुणवत्तापूर्ण-, तकनीकी रूप से सक्षम, समावेशी तथा अनुसंधानआधारित शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सके। भविष्य में शिक्षक शिक्षा संस्थानों को उत्कृष्टता केंद्र-Centres of Excellence) के रूप में विकसित किया जाना चाहिए, जहाँ आधुनिक प्रयोगशालाएँ, डिजिटल संसाधन, नवाचार केंद्र तथा अनुसंधान सुविधाएँ उपलब्ध हों। प्रत्येक शिक्षकप्रशिक्षण संस्थान में गुणवत्ता आ-श्वासन प्रणाली को मजबूत किया जाए तथा नियमित अकादमिक ऑडिट के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग, डेटा विश्लेषण, वर्चुअल रियलिटी (VR), ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) तथा अन्य उभरती प्रौद्योगिकियों को शिक्षकशिक्षा कार्यक्रमों में चरणबद्ध तरीके से शामिल किया जाए। - इससे शिक्षक भविष्य की शिक्षा प्रणाली के अनुरूप दक्ष बन सकेंगे और विद्यार्थियों को नवीन अधिगम अनुभव प्रदान कर पाएँगे। राष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल शिक्षक विकास मंच (National Digital Teacher Development Platform) को और अधिक सशक्त बनाया जाए, जहाँ शिक्षक अपनी सुविधा के अनुसार प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें, प्रमाणपत्र अर्जित कर सकें तथा अपने अनुभव साझा कर सकें। इससे आजीवन अधिगम की संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा।

भविष्य में शिक्षकशिक्षा का मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षा पर आधारित न होकर शिक्षण प्रदर्शन, नवाचार, अनुसंधान, सामुदायिक सहभागिता, डिजिटल दक्षता तथा व्यावसायिक नैतिकता के आधार पर भी किया जाना चाहिए। इससे शिक्षकों का समग्र विकास संभव होगा। उच्च शिक्षा संस्थानों, विद्यालयों, उद्योगों, अनुसंधान संस्थानों तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों के बीच शैक्षणिक सहयोग बढ़ाया जाए। शिक्षक एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर-Faculty Exchange Programme, संयुक्त शोध परियोजनाएँ तथा ऑनलाइन सहयोगात्मक कार्यक्रम प्रारंभ किए जाएँ।

भविष्य में नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों को पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराने होंगे। साथ ही शिक्षकशिक्षा संस्थानों में पारदर्शी भर्ती-, नियमित प्रशिक्षण, गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व तथा उत्तरदायी प्रशासन सुनिश्चित करना होगा। यदि इन सभी उपायों को योजनाबद्ध एवं समन्वित रूप से लागू किया जाता है, तो शिक्षकशिक्षा प्रणाली अधिक प्रभावी, नवाचारी, तकनीकी रूप से सशक्त तथा वैश्विक मानकों के अनुरूप विकसित होगी। यही परिवर्तन विकसित भारत 2047 की परिकल्पना को साकार करने में निर्णायक भूमिका निभाएगा।

निष्कर्ष :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक दूरदर्शी एवं परिवर्तनकारी दस्तावेज़ है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण, समावेशी, बहुविषयक, कौशलसक्षम -आधारित तथा प्रौद्योगिकी-बनाना है। इस नीति की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण आधार शिक्षक हैं, क्योंकि शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता सीधे शिक्षकों की गुणवत्ता एवं उनके व्यावसायिक विकास पर निर्भर करती है। इसलिए शिक्षक-शिक्षा को केवल डिग्री प्रदान करने की प्रक्रिया न मानकर आजीवन सीखने, नवाचार, अनुसंधान, नेतृत्व, नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ना आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक .एड.शिक्षा में व्यापक सुधारों का मार्ग प्रशस्त करती है। चार वर्षीय एकीकृत बी-कार्यक्रम, सतत व्यावसायिक विकास (CPD), डिजिटल दक्षता, समावेशी शिक्षा, बहुविषयक दृष्टिकोण,

अनुभवात्मक अधिगम तथा शोधआधारित शिक्षण जैसे प्रावधान शिक्षक की व्यावसायिक क्षमता को सुदृढ़ - बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके साथ ही नीति शिक्षकों को केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि अधिगम के मार्गदर्शक, नवाचारकर्ता, शोधकर्ता एवं राष्ट्रनिर्माता के रूप में स्थापित करती है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि विकसित भारत 2047 की परिकल्पना तभी साकार हो सकती है जब शिक्षक तकनीकी रूप से दक्ष, अनुसंधानउन्मुख-, मूल्यपरक तथा वैश्विक दृष्टिकोण से युक्त हों। इसके लिए शिक्षकप्रशिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता में सुधार-, डिजिटल अवसंरचना का विकास, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता, शैक्षणिक नेतृत्व तथा सतत मूल्यांकन प्रणाली को सुदृढ़ बनाना आवश्यक है। साथ ही केंद्र एवं राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों, शिक्षकशिक्षा संस्थानों तथा विद्यालयों के बीच समन्वित प्रयास - भी अनिवार्य हैं। यद्यपि नीति के क्रियान्वयन में संसाधनों की कमी, डिजिटल असमानता, प्रशिक्षण की गुणवत्ता तथा संस्थागत चुनौतियाँ विद्यमान हैं, फिर भी उचित योजना, प्रभावी नेतृत्व, पर्याप्त वित्तीय निवेश तथा निरंतर निगरानी के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान संभव है। यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों को व्यवहारिक रूप से लागू किया जाता है, तो भारत में शिक्षकशिक्षा का एक ऐसा - सशक्त मॉडल विकसित होगा जो न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करेगा, बल्कि नवाचार, अनुसंधान, सामाजिक समावेशन तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकशिक्षा का व्यावसायिक - विकास विकसित भारत 2047 की आधारशिला है, क्योंकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षक ही गुणवत्तापूर्ण राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

संदर्भ सूची :

1. शिक्षा मंत्रालय) .(2020). **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**। भारत सरकार।
2. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद)NCTE). (2009). **शिक्षक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखापेशवर : एवं मानवीय शिक्षक की तैयारी की ओर।** नई दिल्लीएनसीटीई। :
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद)NCERT). (2005). **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005।** नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद)NCERT). (2023). **स्कूली शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा।** नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
5. यूनेस्को)UNESCO). (2015). **शिक्षा 2030: इंचियोन घोषणा एवं कार्य रूपरेखा।** पेरिसयूनेस्को। :
6. डार्लिंगहैमंड-, एल) .(2017). **सशक्त शिक्षकप्रदर्शनकारी शिक्षा प्रणालियाँ किस प्रकार -विश्व की उच्च : शिक्षण गुणवत्ता का निर्माण करती हैं।** जोसीबैस।-
7. हैटी, जे) .(2009). **दृश्य अधिगमउपलब्धि से : संबंधित 800 से अधिक मेटाविश्लेषणों का समेकित - अध्ययन।** रूटलेज।
8. फुलन, एम) .(2007). **शैक्षिक परिवर्तन का नया अर्थ (चौथा संस्करण।** टीचर्स कॉलेज प्रेस।(
9. आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन)OECD). (2019). **शिक्षण एवं अधिगम अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षण)TALIS) 2018 के परिणाम।** ओईसीडी पब्लिशिंग।
- 10.विश्वविद्यालय अनुदान आयोग)UGC). (2021). **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत उच्च शिक्षा संस्थानों के रूपांतरण हेतु दिशानिर्देश।** विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
- 11.शिक्षा मंत्रालय) .(2021). **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन की कार्ययोजना।** भारत सरकार।
- 12.नीति आयोग) .(2023). **विजन इंडिया @ 2047।** भारत सरकार।
- 13.मिश्रा, ए., एवं सिंह, आर) .(2022). **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षकों का व्यावसायिक विकास।** *जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज़*, 15(2), 45-58।
- 14.शर्मा, पी) .(2021). **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बाद भारत में शिक्षक शिक्षा सुधार।** *यूनिवर्सिटी न्यूज़*, 59(18), 12-18।
- 15.कुमार, एस., एवं वर्मा, एन) .(2023). **भारत में डिजिटल दक्षताएँ एवं शिक्षकों का व्यावसायिक विकास।** *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, 11(1), 67-79।
- 16.अग्रवाल, जे) .सी .(2019). **विकासशील समाज में शिक्षक एवं शिक्षा।** विकास पब्लिशिंग हाउस।

Disclaimer / Publisher's Note:

The views, opinions, findings, interpretations, and claims expressed in this article are solely those of the author(s). The author(s) are entirely responsible for the accuracy and originality of the content, including compliance with applicable copyright and intellectual property requirements. The publisher and editors assume no responsibility or legal liability for any errors, omissions, copyright infringement, or damages, direct or indirect, arising from the publication or use of the content of this article.



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

© The Author(s) 2026. The Scholarly Foresight Published by Ishwa Academic Publication.